DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-4 ,UNIT-6,
NEO-FRENDIANS:CONTRIBUTIONS OF ERICH FROMM
LECTURE-57

इरिक फ्रोम का योगदान

CONTRIBUTION OF ERICH FROMM

इरिक फ्रोम का जन्म 1900 में जर्मनी के फ्रैंकफर्ट में हुआ | उनकी आरंभिक शिक्षा-दीक्षा भी फ्रैंकफर्ट में ही हुई | वे फ्रैंकफर्ट तथा म्युनिक विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान तथा समाज-शास्त्र का अध्ययन किये | वे हिडेलवर्ग विश्वविद्यालय से पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त किये |उनका संपर्क बर्लिन स्थित साइको एनालिटिक इन्सटीच्युट से भी हुआ जहाँ उन्होंने मनोविश्लेषण में विशेष प्रशिक्षण भी प्राप्त किया |वे 1933 में अमेरिका चले गए |बहुत दिनों तक उन्हें किसी भी अमेरिकन विश्वविद्यालय

में कोई औपचारिक पद नहीं मिला |वे वेनिगटन कॉलेज में 1941 से 1950 तक एक संकाय सदस्य के रूप में कार्य किये | 1950 में उन्हें मेक्सिको विश्वविद्यालय में प्राचार्य का पद प्राप्त हुआ और बाद में वे मेक्सिको साइकोएनालिटिक इंस्टीच्युट के निदेशक भी बने |1976 में वे अपनी तीसरी पत्नी ,एनीस फ्री मैंन फ्रोम के साथ स्विट्जरलैंड चले गये जहाँ उनकी मृत्यु 1980 में हो गयी |उन्होंने कई पुस्तके लिखे जिनमे तीन काफी चर्चित हुई –स्केप फ्रॉम फ्रीडम (1941), मैन फॉर हिमस्लेफ़ (1947),तथा दी सेम सोसाइटी (1950) |

फ्रोम अपने आप को एक मनोविश्लेषक न मानकर समाज विश्लेषक मानते थे | फलस्वरूप ,वे सामाजिक प्रभावों विशेषकर समाज के साथ व्यक्ति के संबंधो को व्यवहार का महत्वपूर्ण निर्धारक मानते थे | फ्रोम का मत था की व्यक्ति का समाज के साथ जो सम्बन्ध होता है ,वह स्थिर न होकर परिवर्तनीय होता है |हाल एवं उनके सहयोगियों का मत है की अपने मनोविज्ञान में फ्रोम सचमुच में फ्रायड के दृष्टिकोण तथा कार्ल मार्क्स के सामाजिक सिद्धांत एवं दर्शनशास्त्र को सुसंयोजित करने का एक सफल प्रयास किया है | फ्रोम के योगदानों को निम्नांकित चार प्रमुख शीर्षकों के तहत बाँटकर अध्ययन किया गया है –

(1) स्वतंत्रता से पलायन (escape from freedom)

(2) पलायन की विधियाँ (methods of escape)

(3) मूल आवश्यकताएँ (basic needs)

(4) व्यक्तित्व प्रकार (personatity types)

इन चारों का वर्णन निम्नांकित है –

(1) स्वतंत्रता से पलायन – फ्रोम की पहली पुस्तक 1941 में प्रकाशित हुयी जिसका नाम 'स्केप फ्रॉम फ्रीडम' था | इस पुस्तक में उन्होंने मनुष्य को एक सामाजिक पशु का दर्जा दिया है | इस पुस्तक में उन्होंने यह इजहार किया है की जैसे –जैसे व्यक्ति अपने जैविक अनुभूतियों के आधार पर अपने आप को विकसित करता है ,उसमे स्वतंत्रता की भावना प्रबल होती है लेकिन इस प्रयास से व्यक्ति अपने आप को अधिक अकेला एवं अलग थलग भी महसूस करने लगता है | आधुनिक समाज में व्यक्ति को कुछ स्वतंत्रता आवश्य प्राप्त हुआ है परन्तु उसके साथ ही साथ उसमे असुरक्षा एवं एकांत प्रियता का गुण विकसित हुआ है | व्यक्ति अपने इस लाचारी ,असुरक्षा एवं एकांत प्रियता से पलायन करने का भरपूर कोशिश करता है क्योकि उसके लिए यह असहनीय हो गया है |इस समस्या का समाधान के लिए फ्रोम ने एक ऐसे

समाज के निर्माण पर बल डाला है जिसमे सभी व्यक्तियों के लिए सामान अवसर हो तथा जिसमे प्रत्येक व्यक्ति का एक दुसरे के साथ मधुर संबंध हो |

(2) पलायन की विधियाँ- फ्रोम का कहना है की मनुष्य में अपनी स्वतंत्रता की भावना से जो लाचारी निःसहायता एकांत वासिता का अभाव उत्पन्न हुआ है ,उससे छुटकारा पाने के लिए कई विधियों की खोज कर रखा है |ये सारी विधियाँ बहुत कुछ फ्रायड द्वारा प्रतिपादित रक्षा प्रक्रम (defence mechanism) के सामान ही है इन विधियों में चार प्रमुख है –

आत्मपिड़न(masochism),परपिड़न(sadism),नासन (destruction) तथा स्वचलन अनुरूपता (automation conformity) |

(3) मूल आवश्यकता –जैसे-जैसे व्यक्ति समाज के साथ अन्तःक्रिया (interaction) करता है |इसमें कुछ आवश्यकताएँ उत्पन्न होती जाती है |फ्रोम के अनुसार ऐसी पाँच आवश्यकताएँ महत्वपूर्ण है – संबंधता की आवश्यकता ,श्रेष्ठता की आवश्यकता,गहरापन की आवश्यकता,पहचान की आवश्यकता तथा उन्मुखता की आवश्यकता |

संबंधता की आवश्यकता में व्यक्ति पारस्परिक आदर एवं बोध गम्यता के माध्यम से दूसरो के साथ उत्तम सम्बन्ध विकसित करने की कोशिश करता है |

श्रेष्ठता की आवश्यकता से तात्पर्य वैसी आवश्यकता से होती है जिसमे व्यक्ति सक्रीय रहना चाहता है ताकि वह अपने आप को एक महत्वपूर्ण प्राणी समझ सके |

पहचान की आवश्यकता से तात्पर्य एक ऐसी आवश्यकता से होती है जिसमे व्यक्ति अपने आप को अकेला बनाने की कोशिश करता है ताकि उसकी विशिष्ट पहचान अन्य व्यक्तियों की तुलना में बनी रहे |

उन्मुखता की आवश्यकता से तात्पर्य एक ऐसी आवश्यकता से होती हो जिसमे व्यक्ति अपने आप एवं दूसरो के प्रति एक ऐसी उन्मुखता विकसित करने की कोशिश करता है जिसमे एक सही एवं वास्तविक छवि उभर सके |

(4) व्यक्तित्व प्रकार –फ्रोम के अनुसार व्यक्तित्व जन्म जात एवं अर्जित विशेषताओं का योग है |उन्होंने चित्तप्रकृति तथा चरित्र के बीच अंतर किया है |चित्तप्रकृति से तात्पर्य अनुक्रिया के ऐसे तरीके से होता है जो जन्म जात शरीर गठनात्मक एवं अपरिवर्तनीय होता है चरित्र चित्तप्रकृति

से भिन्न होता है तथा विभिन्न तरह के सामाजिक प्रभावों से प्राप्त अनुभवों द्वारा निर्मित होता है जब व्यक्ति अपने चरित्र को सामाजिक कारको तथा समाज के विभिन्न पहलुओं के साथ सम्बंधित करने की सफल कोशिश करता है ,तो उससे व्यक्तित्व के विभिन्न प्रकारों की उत्पत्ति होती है | ऐसे व्यक्तित्व प्रकारों में निम्नांकित पाँच महत्वपूर्ण है –

(i) गहनशील प्रकार (receptive type)

(ii) जमाखोर प्रकार (hoarding type)

(iii) शोषक प्रकार (exploitative type)

(iv) बाजारू प्रकार (marketing type)

(v) उत्पादक प्रकार (productive type)

इस तरह से हम देखते है की फ्रोम व्यक्ति के जीवन काल में सामाजिक एवं सांस्कृति कारको पर बल डाल कर व्यक्ति के बारे में एक आशावादी तस्वीर पेश किये है |

इसके बावजूद कुछ लोगों ने फ्रोम के योगदानो की आलोचना किया है जिसमे निम्नांकित प्रमुख है –

(i) आलाचको की राय में फ्रोम का विचार बहुत ही ज्यादा आदर्शवादी व्यवहारिक कम |फलस्वरूप ,यह बहुत

ज्यादा अवास्तविक जैसा लगता है | यही कारण है की इन आलोचकों ने इन्हें मनोवैज्ञानिक कम तथा दार्शनिक अधिक माना है |

(ii) कुछ आलोचकों का मत है की फ्रोम अपने योगदानों के समर्थक में कोई आनुभाविक आँकड़ा प्राप्त करने में असफल रहे है |फलस्वरूप उनके विचारों पर निर्भरता लोगों के मन में कम है |

(iii) कुछ आलोचकों का कहना है की फ्रोम द्वारा बतलाये गए व्यक्तित्व प्रकार वास्तविक न होकर उनके अपने निजी कल्पनाओं पर आधारित है | इसका एक सबूत यह है की वे सभी एक-दुसरे से पूर्णतः स्वतंत्र नहीं है | इन आलोचनाओं के बावजूद फ्रोम के योगदानों का अपना विशिष्ट महत्व है | बहुत कम मनोवैज्ञानिकों ने फ्रोम के सामान मानव के व्यवहारों एवं व्यक्तित्व के प्रकारों की मौलिक व्याख्या किया है |अतः इस ख्याल से फ्रोम का योगदान की महत्ता काफी अधिक है |